doubtnut
India's Number 1 Education App

HINDI

BOOKS - X BOARDS

QUESTION PAPER 2022 TERM 1

खंड क अपठित गद्यांश

1. 'प्रबुद्ध भारत', दिसंबर 1898, को दिए एक साक्षात्कार में विवेकानंदजी ने बताया कि मैंने पृथ्वी के दोनों गोलार्धों का पर्यटन किया है। मेरा तो दृढ विश्वास है कि जिस जाति ने

सीता को उत्पन्न किया, चाहे वह उसकी कल्पना ही क्यों न हो, उस जाति में स्त्री जाति के लिए इतना अधिक सम्मान और श्रद्धा है, जिसकी तुलना संसार में हो ही नहीं सकती । पाश्चात्य स्त्रियाँ ऐसे कई कानूनी बंधनों से जकड़ी हई हैं, जिनसे भारतीय स्त्रियाँ सर्वथा मुक्त एवं अपरिचित हैं । भारतीय समाज में निश्चय ही दोष और अपवाद दोनों हैं । पर यही स्थिति पाश्चात्य समाज की भी है। हमें यह नहीं भूलना चाहिए कि संसार के सभी भागों में प्रीति, कोमलता और साधुता को अभिव्यक्त करने के प्रयत्न चल रहे हैं | भारतीय स्त्री-जीवन में बहत सी समस्याएं हैं और ये समस्याएँ बड़ी गंभीर हैं । परन्तु इनमें से कोई भी ऐसी नहीं हैं जो 'शिक्षा' रूपी मंत्र-बल से हल न हो सके । पर हाँ, शिक्षा की सच्ची कल्पना हममें से कदाचित ही किसी ने की हो । मैं मानता हूँ

कि सच्ची शिक्षा वह है जिससे मनुष्य की मानसिक शक्तियों का विकास हो । वह शब्दों का केवल रटना मात्र न हो । यह व्यक्ति की मानसिक शक्तियों का ऐसा विकास हो जिससे वह स्वयमेव स्वतंत्रतापूर्वक विचार करके उचित निर्णय कर सके । भारतीय स्त्रियों को ऐसी शिक्षा दी जाए जिससे वे निर्भय होकर भारत के प्रति अपने कर्तव्य को भली-भाँति निभा सके और संघमित्रा, लीला, अहिल्याबाई और मीरा आदि महान भारतीय देवियों की परंपरा को आगे बढ़ा सकें, 'वीर-प्रसूता' बन सकें।

गद्यांश में समस्त विश्व द्वारा किए जाने वाले किन प्रयत्नों का उल्लेख है ?

A. स्त्रियों को धार्मिक-सामाजिक शिक्षा दिए जाने के लिए किए जाने वाले प्रयास ।

B. लोगों में प्रेम, सज्जनता एवं संवेदनशीलता के विकास के लिए किए गए प्रयास ।

C. मानव जाति को धर्म-राजनीति की शिक्षा हेतु किए जाने वाले प्रयास ।

D. समस्त समस्याओं का समाधान धर्म में तलाशने हेतु किए जाने वाले प्रयास ।

Answer:

Watch Video Solution

2. 'प्रबुद्ध भारत', दिसंबर 1898, को दिए एक साक्षात्कार में विवेकानंदजी ने बताया कि मैंने पृथ्वी के दोनों गोलार्धों का पर्यटन किया है। मेरा तो दृढ विश्वास है कि जिस जाति ने सीता को उत्पन्न किया, चाहे वह उसकी कल्पना ही क्यों न हो, उस जाति में स्त्री जाति के लिए इतना अधिक सम्मान और श्रद्धा है, जिसकी तुलना संसार में हो ही नहीं सकती । पाश्चात्य स्त्रियाँ ऐसे कई कानूनी बंधनों से जकड़ी हई हैं, जिनसे भारतीय स्त्रियाँ सर्वथा मुक्त एवं अपरिचित हैं । भारतीय समाज में निश्चय ही दोष और अपवाद दोनों हैं । पर यही स्थिति पाश्चात्य समाज की भी है। हमें यह नहीं भूलना चाहिए कि संसार के सभी भागों में प्रीति, कोमलता और

साधुता को अभिव्यक्त करने के प्रयत्न चल रहे हैं | भारतीय स्त्री-जीवन में बहत सी समस्याएं हैं और ये समस्याएँ बड़ी गंभीर हैं । परन्तु इनमें से कोई भी ऐसी नहीं हैं जो 'शिक्षा' रूपी मंत्र-बल से हल न हो सके । पर हाँ, शिक्षा की सच्ची कल्पना हममें से कदाचित ही किसी ने की हो । मैं मानता हूँ कि सच्ची शिक्षा वह है जिससे मनुष्य की मानसिक शक्तियों का विकास हो । वह शब्दों का केवल रटना मात्र न हो । यह व्यक्ति की मानसिक शक्तियों का ऐसा विकास हो जिससे वह स्वयमेव स्वतंत्रतापूर्वक विचार करके उचित निर्णय कर सके । भारतीय स्त्रियों को ऐसी शिक्षा दी जाए जिससे वे निर्भय होकर भारत के प्रति अपने कर्तव्य को भली-भाँति निभा सके और संघमित्रा, लीला, अहिल्याबाई और मीरा आदि महान भारतीय देवियों की परंपरा को आगे बढ़ा सकें, 'वीर-प्रसूता'

बन सकें।

“भारतीय समाज में निश्चय ही दोष और अपवाद दोनों हैं।" विवेकानंद ने ऐसा क्यों कहा?

A. भारतीय समाज में महिलाओं के शोषित और सशक्त दोनों रूप होने के कारण।

B. भारतीय समाज में महिलाओं का बहुत अधिक शोषण होने के कारण।

C. भारतीय समाज में महिलाओं के अत्यधिक धार्मिक होने के कारण ।

D. भारतीय समाज में महिलाओं के अत्यधिक अशिक्षित होने के कारण।

Answer:

Watch Video Solution

3. 'प्रबुद्ध भारत', दिसंबर 1898, को दिए एक साक्षात्कार में विवेकानंदजी ने बताया कि मैंने पृथ्वी के दोनों गोलार्धों का पर्यटन किया है। मेरा तो दृढ विश्वास है कि जिस जाति ने सीता को उत्पन्न किया, चाहे वह उसकी कल्पना ही क्यों न हो, उस जाति में स्त्री जाति के लिए इतना अधिक सम्मान और

श्रद्धा है, जिसकी तुलना संसार में हो ही नहीं सकती । पाश्चात्य स्त्रियाँ ऐसे कई कानूनी बंधनों से जकड़ी हुई हैं, जिनसे भारतीय स्त्रियाँ सर्वथा मुक्त एवं अपरिचित हैं । भारतीय समाज में निश्चय ही दोष और अपवाद दोनों हैं । पर यही स्थिति पाश्चात्य समाज की भी है। हमें यह नहीं भूलना चाहिए कि संसार के सभी भागों में प्रीति, कोमलता और साधुता को अभिव्यक्त करने के प्रयत्न चल रहे हैं | भारतीय स्त्री-जीवन में बहत सी समस्याएं हैं और ये समस्याएँ बड़ी गंभीर हैं । परन्तु इनमें से कोई भी ऐसी नहीं हैं जो 'शिक्षा' रूपी मंत्र-बल से हल न हो सके । पर हाँ, शिक्षा की सच्ची कल्पना हममें से कदाचित ही किसी ने की हो । मैं मानता हूँ कि सच्ची शिक्षा वह है जिससे मनुष्य की मानसिक शक्तियों का विकास हो । वह शब्दों का केवल रटना मात्र न हो । यह

व्यक्ति की मानसिक शक्तियों का ऐसा विकास हो जिससे वह स्वयमेव स्वतंत्रतापूर्वक विचार करके उचित निर्णय कर सके। भारतीय स्त्रियों को ऐसी शिक्षा दी जाए जिससे वे निर्भय होकर भारत के प्रति अपने कर्तव्य को भली-भाँति निभा सके और संघमित्रा, लीला, अहिल्याबाई और मीरा आदि महान भारतीय देवियों की परंपरा को आगे बढ़ा सकें, 'वीर-प्रसूता' बन सकें।

सच्ची शिक्षा' की परिकल्पना में शामिल नहीं है -

A. धर्म-शिक्षा के माध्यम से सामाजिक समस्याओं का समाधान

B. महिलाओं की शिक्षा-प्राप्ति में समान रूप से भागीदारी

C. अभय, सजगता एवं कर्तव्यबोध के विकास हेतु शिक्षा

D. स्वतंत्र सोच एवं निर्णय क्षमता के विकास हेतु शिक्षा

Answer:

Watch Video Solution

4. 'प्रबुद्ध भारत', दिसंबर 1898, को दिए एक साक्षात्कार में विवेकानंदजी ने बताया कि मैंने पृथ्वी के दोनों गोलार्धों का पर्यटन किया है। मेरा तो दृढ विश्वास है कि जिस जाति ने सीता को उत्पन्न किया, चाहे वह उसकी कल्पना ही क्यों न हो, उस जाति में स्त्री जाति के लिए इतना अधिक सम्मान और

श्रद्धा है, जिसकी तुलना संसार में हो ही नहीं सकती । पाश्चात्य स्त्रियाँ ऐसे कई कानूनी बंधनों से जकड़ी हुई हैं, जिनसे भारतीय स्त्रियाँ सर्वथा मुक्त एवं अपरिचित हैं । भारतीय समाज में निश्चय ही दोष और अपवाद दोनों हैं । पर यही स्थिति पाश्चात्य समाज की भी है। हमें यह नहीं भूलना चाहिए कि संसार के सभी भागों में प्रीति, कोमलता और साधुता को अभिव्यक्त करने के प्रयत्न चल रहे हैं | भारतीय स्त्री-जीवन में बहत सी समस्याएं हैं और ये समस्याएँ बड़ी गंभीर हैं । परन्तु इनमें से कोई भी ऐसी नहीं हैं जो 'शिक्षा' रूपी मंत्र-बल से हल न हो सके । पर हाँ, शिक्षा की सच्ची कल्पना हममें से कदाचित ही किसी ने की हो । मैं मानता हूँ कि सच्ची शिक्षा वह है जिससे मनुष्य की मानसिक शक्तियों का विकास हो । वह शब्दों का केवल रटना मात्र न हो । यह

व्यक्ति की मानसिक शक्तियों का ऐसा विकास हो जिससे वह स्वयमेव स्वतंत्रतापूर्वक विचार करके उचित निर्णय कर सके। भारतीय स्त्रियों को ऐसी शिक्षा दी जाए जिससे वे निर्भय होकर भारत के प्रति अपने कर्तव्य को भली-भाँति निभा सके और संघमित्रा, लीला, अहिल्याबाई और मीरा आदि महान भारतीय देवियों की परंपरा को आगे बढ़ा सकें, 'वीर-प्रसूता' बन सकें।

हर समस्या के समाधान का राम-बाण है -

A. सर्व शिक्षा

B. स्त्री शिक्षा

C. सामाजिक शिक्षा

D. राजनैतिक शिक्षा

Answer:

Watch Video Solution

5. 'प्रबुद्ध भारत', दिसंबर 1898, को दिए एक साक्षात्कार में विवेकानंदजी ने बताया कि मैंने पृथ्वी के दोनों गोलार्धों का पर्यटन किया है। मेरा तो दृढ विश्वास है कि जिस जाति ने सीता को उत्पन्न किया, चाहे वह उसकी कल्पना ही क्यों न हो, उस जाति में स्त्री जाति के लिए इतना अधिक सम्मान और श्रद्धा है, जिसकी तुलना संसार में हो ही नहीं सकती ।

पाश्चात्य स्त्रियाँ ऐसे कई कानूनी बंधनों से जकड़ी हुई हैं, जिनसे भारतीय स्त्रियाँ सर्वथा मुक्त एवं अपरिचित हैं । भारतीय समाज में निश्चय ही दोष और अपवाद दोनों हैं । पर यही स्थिति पाश्चात्य समाज की भी है। हमें यह नहीं भूलना चाहिए कि संसार के सभी भागों में प्रीति, कोमलता और साधुता को अभिव्यक्त करने के प्रयत्न चल रहे हैं | भारतीय स्त्री-जीवन में बहत सी समस्याएं हैं और ये समस्याएँ बड़ी गंभीर हैं । परन्तु इनमें से कोई भी ऐसी नहीं हैं जो 'शिक्षा' रूपी मंत्र-बल से हल न हो सके । पर हाँ, शिक्षा की सच्ची कल्पना हममें से कदाचित ही किसी ने की हो । मैं मानता हूँ कि सच्ची शिक्षा वह है जिससे मनुष्य की मानसिक शक्तियों का विकास हो । वह शब्दों का केवल रटना मात्र न हो । यह व्यक्ति की मानसिक शक्तियों का ऐसा विकास हो जिससे वह

स्वयमेव स्वतंत्रतापूर्वक विचार करके उचित निर्णय कर सके । भारतीय स्त्रियों को ऐसी शिक्षा दी जाए जिससे वे निर्भय होकर भारत के प्रति अपने कर्तव्य को भली-भाँति निभा सके और संघमित्रा, लीला, अहिल्याबाई और मीरा आदि महान भारतीय देवियों की परंपरा को आगे बढ़ा सकें, 'वीर-प्रसूता' बन सकें।

'वीर-प्रसूता का आशय है

A. अपना निर्णय स्वयं लेने वाली

B. परंपराओं का निर्वाह करने वाली

C. वीरों को जन्म देने वाली

D. कर्तव्य का बोध रखने वाली अथवा

Answer:

Watch Video Solution

6. सोना तपने पर कंचन बनता है। ठीक यही बात आदमी के साथ भी है। हमारे धर्मग्रंथों में कहा गया है कि दुनिया में सबसे दुर्लभ आदमी का शरीर है। सारे प्राणियों में आदमी को ऊँचा माना गया है और वह इसलिए कि आदमी के पास बुद्धि है, विवेक है । संसार में जितनी चीजें आविष्कृत हुई हैं, सब बुद्धि के ज़ार पर हुई है । आज हजारों मील की यात्रा घंटों में हो जाती है । यह सब आदमी की बद्धि से ही संभव हुआ है जिसके पास इतनी चीजें हों वह धन या दुनियादारी की चीज़ों

के पीछे भटके, यह उचित नहीं है । बुद्धि का प्रयोग उसे बराबर आगे बढ़ने के लिए करना चाहिए । जिन्होंने ऐसा किया है, उन्होंने मानवता की बड़ा सेवा की है । उनका नाम अमर हो गया है । धन का खोट आदमी को तब मालूम होता है, जब वह खरा बनने लगता है । खरा बनने का अर्थ यह नहीं है कि इंसान घर-बार छोड़ दे. जंगल में चला जाए और भगवान के चरणों में लो लगाकर बैठा रहे । बहुत-से लोग ऐसा करते भी है, पर यह रास्ता सबका रास्ता नहीं है। दुनिया में ज़्यादातर लोगों का वास्ता अपने घर के लोगों से ही नहीं, दूसरों के साथ भी पड़ता है । उत्तम पुरुष वह है, जो अपनी बुराइयों को दूर करता है और नीति का जीवन बिताते हुए अपने देश और समाज के काम आता है, सबसे प्रेम करता है

और सबके सुख-दुःख में काम आता है।

बुध्दि -विवेक का प्रयोग किस कार्य में होना चाहिए ?

A. सफर को आसान बनाने वाली खोजो में

B. अधिक से अधिक धन-दौलत जुटाने में

C. निरंतर स्वयं का विकास करते रहने में

D. भौतिक सुख-सुविधाओं को प्राप्त करने में

Answer:

Watch Video Solution

7. सोना तपने पर कंचन बनता है। ठीक यही बात आदमी के साथ भी है। हमारे धर्मग्रंथों में कहा गया है कि दुनिया में सबसे दुर्लभ आदमी का शरीर है। सारे प्राणियों में आदमी को ऊँचा माना गया है और वह इसलिए कि आदमी के पास बुद्धि है, विवेक है । संसार में जितनी चीजें आविष्कृत हुई हैं, सब बुद्धि के ज़ार पर हुई है । आज हजारों मील की यात्रा घंटों में हो जाती है । यह सब आदमी की बद्धि से ही संभव हुआ है जिसके पास इतनी चीजें हों वह धन या दुनियादारी की चीज़ों के पीछे भटके, यह उचित नहीं है । बुद्धि का प्रयोग उसे बराबर आगे बढ़ने के लिए करना चाहिए । जिन्होंने ऐसा किया है, उन्होंने मानवता की बड़ा सेवा की है । उनका नाम अमर हो गया है । धन का खोट आदमी को तब मालूम होता

है, जब वह खरा बनने लगता है । खरा बनने का अर्थ यह नहीं है कि इंसान घर-बार छोड़ दे. जंगल में चला जाए और भगवान के चरणों में लो लगाकर बैठा रहे । बहुत-से लोग ऐसा करते भी है, पर यह रास्ता सबका रास्ता नहीं है। दुनिया में ज़्यादातर लोगों का वास्ता अपने घर के लोगों से ही नहीं, दूसरों के साथ भी पड़ता है । उत्तम पुरुष वह है, जो अपनी बुराइयों को दूर करता है और नीति का जीवन बिताते हुए अपने देश और समाज के काम आता है, सबसे प्रेम करता है और सबके सुख-दुःख में काम आता है।

सभी प्राणियों में मानव को सर्वश्रेष्ठ क्यों माना गया है ?

A. उसके पास मौजूद बुध्दि और विवेक के कारण

B. पशुओं से भिन्न धन और दौलत के कारण

C. उसके पास मौजूद धन और दौलत के कारण

D. उसके द्वारा की गई विविध खोजों के कारण

Answer:

Watch Video Solution

8. सोना तपने पर कंचन बनता है। ठीक यही बात आदमी के साथ भी है। हमारे धर्मग्रंथों में कहा गया है कि दुनिया में सबसे दुर्लभ आदमी का शरीर है। सारे प्राणियों में आदमी को ऊँचा माना गया है और वह इसलिए कि आदमी के पास बुद्धि है, विवेक है । संसार में जितनी चीजें आविष्कृत हुई हैं, सब

बुद्धि के ज़ार पर हुई है । आज हजारों मील की यात्रा घंटों में हो जाती है । यह सब आदमी की बद्धि से ही संभव हुआ है जिसके पास इतनी चीजें हों वह धन या दुनियादारी की चीज़ों के पीछे भटके, यह उचित नहीं है । बुद्धि का प्रयोग उसे बराबर आगे बढ़ने के लिए करना चाहिए । जिन्होंने ऐसा किया है, उन्होंने मानवता की बड़ा सेवा की है । उनका नाम अमर हो गया है । धन का खोट आदमी को तब मालूम होता है, जब वह खरा बनने लगता है । खरा बनने का अर्थ यह नहीं है कि इंसान घर-बार छोड़ दे. जंगल में चला जाए और भगवान के चरणों में लो लगाकर बैठा रहे । बहुत-से लोग ऐसा करते भी है, पर यह रास्ता सबका रास्ता नहीं है। दुनिया में ज़्यादातर लोगों का वास्ता अपने घर के लोगों से ही नहीं, दूसरों के साथ भी पड़ता है । उत्तम पुरुष वह है, जो अपनी

बुराइयों को दूर करता है और नीति का जीवन बिताते हुए अपने देश और समाज के काम आता है, सबसे प्रेम करता है और सबके सुख-दुःख में काम आता है।

धन की निरर्थकता का अहसास कब होता है ?

A. जब उससे मनचाही वस्तु नहीं मिल पाती है |

B. घर-संसार का त्याग कर संन्यास ग्रहण करने पर।

C. यह पता चलने पर कि इससे प्राप्त सुख वास्तविक नहीं है।

D. यह पता चलने पर कि इसकी मौजूदगी खतरे का कारण है।

Answer:

Watch Video Solution

9. सोना तपने पर कंचन बनता है। ठीक यही बात आदमी के साथ भी है। हमारे धर्मग्रंथों में कहा गया है कि दुनिया में सबसे दुर्लभ आदमी का शरीर है। सारे प्राणियों में आदमी को ऊँचा माना गया है और वह इसलिए कि आदमी के पास बुद्धि है, विवेक है । संसार में जितनी चीजें आविष्कृत हुई हैं, सब बुद्धि के ज़ार पर हुई है । आज हजारों मील की यात्रा घंटों में हो जाती है । यह सब आदमी की बद्धि से ही संभव हुआ है जिसके पास इतनी चीजें हों वह धन या दुनियादारी की चीज़ों

के पीछे भटके, यह उचित नहीं है । बुद्धि का प्रयोग उसे बराबर आगे बढ़ने के लिए करना चाहिए । जिन्होंने ऐसा किया है, उन्होंने मानवता की बड़ा सेवा की है । उनका नाम अमर हो गया है । धन का खोट आदमी को तब मालूम होता है, जब वह खरा बनने लगता है । खरा बनने का अर्थ यह नहीं है कि इंसान घर-बार छोड़ दे. जंगल में चला जाए और भगवान के चरणों में लो लगाकर बैठा रहे । बहुत-से लोग ऐसा करते भी है, पर यह रास्ता सबका रास्ता नहीं है। दुनिया में ज़्यादातर लोगों का वास्ता अपने घर के लोगों से ही नहीं, दूसरों के साथ भी पड़ता है । उत्तम पुरुष वह है, जो अपनी बुराइयों को दूर करता है और नीति का जीवन बिताते हुए अपने देश और समाज के काम आता है, सबसे प्रेम करता है

और सबके सुख-दुःख में काम आता है।

धर्मग्रंथ किसे दुर्लभ बताते हैं ?

A. अमर होने को

B. बुद्धि-विवेक को

C. भौतिक उपलब्धि को

D. मानव तन को

Answer:

Watch Video Solution

10. सोना तपने पर कंचन बनता है। ठीक यही बात आदमी के साथ भी है। हमारे धर्मग्रंथों में कहा गया है कि दुनिया में सबसे दुर्लभ आदमी का शरीर है। सारे प्राणियों में आदमी को ऊँचा माना गया है और वह इसलिए कि आदमी के पास बुद्धि है, विवेक है । संसार में जितनी चीजें आविष्कृत हुई हैं, सब बुद्धि के ज़ार पर हुई है । आज हजारों मील की यात्रा घंटों में हो जाती है । यह सब आदमी की बद्धि से ही संभव हुआ है जिसके पास इतनी चीजें हों वह धन या दुनियादारी की चीज़ों के पीछे भटके, यह उचित नहीं है । बुद्धि का प्रयोग उसे बराबर आगे बढ़ने के लिए करना चाहिए । जिन्होंने ऐसा किया है, उन्होंने मानवता की बड़ा सेवा की है । उनका नाम अमर हो गया है । धन का खोट आदमी को तब मालूम होता

है, जब वह खरा बनने लगता है । खरा बनने का अर्थ यह नहीं है कि इंसान घर-बार छोड़ दे. जंगल में चला जाए और भगवान के चरणों में लो लगाकर बैठा रहे । बहुत-से लोग ऐसा करते भी है, पर यह रास्ता सबका रास्ता नहीं है। दुनिया में ज़्यादातर लोगों का वास्ता अपने घर के लोगों से ही नहीं, दूसरों के साथ भी पड़ता है । उत्तम पुरुष वह है, जो अपनी बुराइयों को दूर करता है और नीति का जीवन बिताते हुए अपने देश और समाज के काम आता है, सबसे प्रेम करता है और सबके सुख-दुःख में काम आता है।

'श्रेष्ठ' कौन है ?

A. प्रेम और मानवता में विश्वास करने वाला।

B. निरंतर अपना आर्थिक विकास करने वाला।

C. भक्ति और शक्ति में विश्वास करने वाला।

D. निरंतर अपना शैक्षणिक विकास करने वाला।

Answer:

Watch Video Solution

11. मध्यप्रदेश के देवास जनपद में लोगों के संकल्प और पुरुषार्थ से 1067 तालाब बनाए गए । पर्याप्त संख्या में तालाब न होने से मध्यप्रदेश में पानी की कमी बनी रहती है लेकिन देवास में पानी की किल्लत खत्म हो गई है। ऐसा ही संकल्प अगर देश के हर गाँव और कस्बे में रहने वाले लोगों

में आ जाए तो पानी को लेकर हाहाकार की स्थिति किसी गाँव में नहीं होगी । परंपरागत तालाब संस्कृति को पुनर्जीवित किए बिना हर गांव में तालाब संस्कृति का पुनर्वास नहीं हो सकता । आज देश के 254 जिलों में पानी की भारी ।। किल्लत है । इससे यहाँ की आबादी को उसकी जरूरत के मुताबिक पानी नहीं मिल पा रहा है। पानी का अत्यधिक दोहन और पानी की खपत बढ़ने के कारण पिछले 30-40 वर्षों में पानी की समस्या तेज़ी से बढ़ी। है । एक तरफ तो पानी की प्रति व्यक्ति माँग निरंतर बढ़ती जा रही है वहीं दूसरी ओर देश की आबादी भी लगातार बढ़ रही है। ऐसे में पानी की माँग बढ़ेगी और उसकी उपलब्धता कम होती जाएगी । केंद्रीय मौसम विज्ञान के अनुसार देश की कुल वार्षिक वर्षा 1170 मि.मी. होती है, वह भी महज तीन महीने में लेकिन इस अकूत

पानी का इस्तेमाल हम महज़ 20% ही कर पाते हैं अर्थात् 80% पानी बिना इस्तेमाल यों ही बह जाता है। अगर बरसात के पानी को संरक्षित करने की योजना पर अमल करें तो पानी की कमी से ही छुटकारा नहीं मिलेगा बल्कि पानी को लेकर होने वाली राजनीति से भी हमेशा के लिए छुटकारा मिल जाएगा।

जल को लेकर होने वाली राजनीति को कैसे दूर किया जा सकता है ?

A. जल को लेकर कोरी राजनीति करके।

B. जल को लेकर राजनीति न करके ।

C. जल संबंधी कानूनों का निर्माण करके।

D. जल संरक्षण की योजना पर अमल करके ।

Answer:

Watch Video Solution

12. मध्यप्रदेश के देवास जनपद में लोगों के संकल्प और पुरुषार्थ से 1067 तालाब बनाए गए । पर्याप्त संख्या में तालाब न होने से मध्यप्रदेश में पानी की कमी बनी रहती है लेकिन देवास में पानी की किल्लत खत्म हो गई है। ऐसा ही संकल्प अगर देश के हर गाँव और कस्बे में रहने वाले लोगों में आ जाए तो पानी को लेकर हाहाकार की स्थिति किसी

गाँव में नहीं होगी । परंपरागत तालाब संस्कृति को पुनर्जीवित किए बिना हर गांव में तालाब संस्कृति का पुनर्वास नहीं हो सकता । आज देश के 254 जिलों में पानी की भारी ।। किल्लत है । इससे यहाँ की आबादी को उसकी जरूरत के मुताबिक पानी नहीं मिल पा रहा है। पानी का अत्यधिक दोहन और पानी की खपत बढ़ने के कारण पिछले 30-40 वर्षों में पानी की समस्या तेज़ी से बढ़ी। है । एक तरफ तो पानी की प्रति व्यक्ति माँग निरंतर बढ़ती जा रही है वहीं दूसरी ओर देश की आबादी भी लगातार बढ़ रही है। ऐसे में पानी की माँग बढ़ेगी और उसकी उपलब्धता कम होती जाएगी । केंद्रीय मौसम विज्ञान के अनुसार देश की कुल वार्षिक वर्षा 1170 मि.मी. होती है, वह भी महज तीन महीने में लेकिन इस अकूत पानी का इस्तेमाल हम महज़ 20% ही कर पाते हैं अर्थात्

80% पानी बिना इस्तेमाल यों ही बह जाता है। अगर बरसात के पानी को संरक्षित करने की योजना पर अमल करें तो पानी की कमी से ही छुटकारा नहीं मिलेगा बल्कि पानी को लेकर होने वाली राजनीति से भी हमेशा के लिए छुटकारा मिल जाएगा।

देवास निवासियों की जल-समस्या का समाधान हुआ-

A. जल संरक्षण हेतु व्यापक रूप से तालाबों का निर्माण करके।

B. जल संरक्षण हेतु व्यापक रूप से धरना-प्रदर्शन करके।

C. जल संरक्षण हेतु व्यापक रूप से राजनीति करके।

D. जल संरक्षण हेतु व्यापक रूप से कानून-निर्माण करके।

Answer:

Watch Video Solution

13. मध्यप्रदेश के देवास जनपद में लोगों के संकल्प और पुरुषार्थ से 1067 तालाब बनाए गए । पर्याप्त संख्या में तालाब न होने से मध्यप्रदेश में पानी की कमी बनी रहती है लेकिन देवास में पानी की किल्लत खत्म हो गई है। ऐसा ही संकल्प अगर देश के हर गाँव और कस्बे में रहने वाले लोगों

में आ जाए तो पानी को लेकर हाहाकार की स्थिति किसी गाँव में नहीं होगी । परंपरागत तालाब संस्कृति को पुनर्जीवित किए बिना हर गांव में तालाब संस्कृति का पुनर्वास नहीं हो सकता । आज देश के 254 जिलों में पानी की भारी ।। किल्लत है । इससे यहाँ की आबादी को उसकी जरूरत के मुताबिक पानी नहीं मिल पा रहा है। पानी का अत्यधिक दोहन और पानी की खपत बढ़ने के कारण पिछले 30-40 वर्षों में पानी की समस्या तेज़ी से बढ़ी। है । एक तरफ तो पानी की प्रति व्यक्ति माँग निरंतर बढ़ती जा रही है वहीं दूसरी ओर देश की आबादी भी लगातार बढ़ रही है। ऐसे में पानी की माँग बढ़ेगी और उसकी उपलब्धता कम होती जाएगी । केंद्रीय मौसम विज्ञान के अनुसार देश की कुल वार्षिक वर्षा 1170 मि.मी. होती है, वह भी महज तीन महीने में लेकिन इस अकूत

पानी का इस्तेमाल हम महज़ 20% ही कर पाते हैं अर्थात् 80% पानी बिना इस्तेमाल यों ही बह जाता है। अगर बरसात के पानी को संरक्षित करने की योजना पर अमल करें तो पानी की कमी से ही छुटकारा नहीं मिलेगा बल्कि पानी को लेकर होने वाली राजनीति से भी हमेशा के लिए छुटकारा मिल जाएगा।

वार्षिक वर्षा का कितना प्रतिशत जल बर्बाद हो जाता है ?

A. 80 प्रतिशत

B. 20 प्रतिशत

C. 30 प्रतिशत

D. 40 प्रतिशत

Answer:

Watch Video Solution

14. मध्यप्रदेश के देवास जनपद में लोगों के संकल्प और पुरुषार्थ से 1067 तालाब बनाए गए । पर्याप्त संख्या में तालाब न होने से मध्यप्रदेश में पानी की कमी बनी रहती है लेकिन देवास में पानी की किल्लत खत्म हो गई है। ऐसा ही संकल्प अगर देश के हर गाँव और कस्बे में रहने वाले लोगों में आ जाए तो पानी को लेकर हाहाकार की स्थिति किसी गाँव में नहीं होगी । परंपरागत तालाब संस्कृति को पुनर्जीवित किए बिना हर गांव में तालाब संस्कृति का पुनर्वास नहीं हो

सकता । आज देश के 254 जिलों में पानी की भारी ।। किल्लत है । इससे यहाँ की आबादी को उसकी जरूरत के मुताबिक पानी नहीं मिल पा रहा है। पानी का अत्यधिक दोहन और पानी की खपत बढ़ने के कारण पिछले 30-40 वर्षों में पानी की समस्या तेज़ी से बढ़ी। है । एक तरफ तो पानी की प्रति व्यक्ति माँग निरंतर बढ़ती जा रही है वहीं दूसरी ओर देश की आबादी भी लगातार बढ़ रही है। ऐसे में पानी की माँग बढ़ेगी और उसकी उपलब्धता कम होती जाएगी । केंद्रीय मौसम विज्ञान के अनुसार देश की कुल वार्षिक वर्षा 1170 मि.मी. होती है, वह भी महज तीन महीने में लेकिन इस अकूत पानी का इस्तेमाल हम महज़ 20% ही कर पाते हैं अर्थात् 80% पानी बिना इस्तेमाल यों ही बह जाता है। अगर बरसात के पानी को संरक्षित करने की योजना पर अमल करें तो

पानी की कमी से ही छुटकारा नहीं मिलेगा बल्कि पानी को लेकर होने वाली राजनीति से भी हमेशा के लिए छुटकारा मिल जाएगा।

देश की जल संबंधी समस्या का सर्वोपयुक्त समाधान है -

A. वर्षा के जल को संरक्षित करने की योजना बनाना ।

B. वर्षा के जल को संरक्षित करने हेतु कानून बनाना ।

C. वर्षा के जल को संरक्षित करने पर विचार-विमर्श करना ।

D. वर्षों के जल को संरक्षित करने की योजना पर अमल करना।

Answer:

Watch Video Solution

15. मध्यप्रदेश के देवास जनपद में लोगों के संकल्प और पुरुषार्थ से 1067 तालाब बनाए गए । पर्याप्त संख्या में तालाब न होने से मध्यप्रदेश में पानी की कमी बनी रहती है लेकिन देवास में पानी की किल्लत खत्म हो गई है। ऐसा ही संकल्प अगर देश के हर गाँव और कस्बे में रहने वाले लोगों में आ जाए तो पानी को लेकर हाहाकार की स्थिति किसी गाँव में नहीं होगी । परंपरागत तालाब संस्कृति को पुनर्जीवित किए बिना हर गांव में तालाब संस्कृति का पुनर्वास नहीं हो

सकता । आज देश के 254 जिलों में पानी की भारी ।। किल्लत है । इससे यहाँ की आबादी को उसकी जरूरत के मुताबिक पानी नहीं मिल पा रहा है। पानी का अत्यधिक दोहन और पानी की खपत बढ़ने के कारण पिछले 30-40 वर्षों में पानी की समस्या तेज़ी से बढ़ी। है । एक तरफ तो पानी की प्रति व्यक्ति माँग निरंतर बढ़ती जा रही है वहीं दूसरी ओर देश की आबादी भी लगातार बढ़ रही है। ऐसे में पानी की माँग बढ़ेगी और उसकी उपलब्धता कम होती जाएगी । केंद्रीय मौसम विज्ञान के अनुसार देश की कुल वार्षिक वर्षा 1170 मि.मी. होती है, वह भी महज तीन महीने में लेकिन इस अकूत पानी का इस्तेमाल हम महज़ 20% ही कर पाते हैं अर्थात् 80% पानी बिना इस्तेमाल यों ही बह जाता है। अगर बरसात के पानी को संरक्षित करने की योजना पर अमल करें तो

पानी की कमी से ही छुटकारा नहीं मिलेगा बल्कि पानी को लेकर होने वाली राजनीति से भी हमेशा के लिए छुटकारा मिल जाएगा।

निम्नलिखित में से क्या, जल की बढ़ती किल्लत का कारण नहीं है ?

A. जल की बढ़ती खपत

B. देश की बढ़ती आबादी

C. तालाबों का संरक्षण

D. जल का अत्यधिक दोहन

Answer:

Watch Video Solution

16. ईश्वर का नाम लेकर उस पर विश्वास कर हम मन में शक्ति का एकीकरण कर कार्यरत होते हैं । हमारा विश्वास मजबूत होता है कि हमारे साथ ईश्वर है । हम इस कार्य में सफल होंगे । आत्मविश्वास को दृढ़ बनाने के लिए ईश्वर का अस्तित्व बनाया गया है । इसके साथ-साथ 'ईश्वर' की कल्पना मनुष्य को भयभीत भी करती है । एकांत में भी मनुष्य कोई पाप या गलत काम न कर सके, इसी आधार पर उसे सर्वव्यापी, सर्वद्रष्टा बतलाया गया है। कण-कण में उसका निवास माना गया है । मनुष्य पर नियंत्रण रखने के लिए किसी न किसी शक्ति की आवश्यकता तो है ही । इसी आधार पर ईश्वर की

संकल्पना की गई और इसी प्रकार असफलताओं को रोकने के लिए, अपने दोष पर परदा डालने के लिए 'भाग्य' की भी कल्पना की गई। हम स्वयं अपने भाग्य विधाता है । जैसा कार्य करेंगे, वैसा फल पाएंगे। अतएव भाग्य को आप दोष न देंचींटी को देखें । वह कितनी बार चढ़ती-गिरती है । अगर वह भाग्यवादी होती तो फिर चढ़ ही न पाती । निरंतर प्रयास करके ही वह सफल होती है । वह भाग्य पर निर्भर नहीं, कर्म करके दिखलाती है। इस कारण बराबर कार्य में लगे रहें । सफलता हाथ आए या फिर असफलता ..., सफलता पर प्रसन्न होकर अपनी प्रगति धीमी न करें । असफलता पर घबराकर या निराश होकर मैदान छोड़कर न भागे । अपना कार्य बराबर आगे बढ़ाते रहें । जो उद्यम करते हैं, परिश्रमरत रहते हैं, निरंतर अपने कदम का प्यान रखते हैं, वे अवश्य ही

जो भी इच्छा करते हैं, पा जाया करते हैं।

अकर्मण्य अपनी असफलता का कारण किसे मानते हैं ?

A. ईश्वर को

B. दुर्भाग्य को

C. सौभाग्य को

D. परिश्रम को

Answer:

Watch Video Solution

17. ईश्वर का नाम लेकर उस पर विश्वास कर हम मन में शक्ति का एकीकरण कर कार्यरत होते हैं । हमारा विश्वास मजबूत होता है कि हमारे साथ ईश्वर है । हम इस कार्य में सफल होंगे । आत्मविश्वास को दृढ़ बनाने के लिए ईश्वर का अस्तित्व बनाया गया है । इसके साथ-साथ 'ईश्वर' की कल्पना मनुष्य को भयभीत भी करती है । एकांत में भी मनुष्य कोई पाप या गलत काम न कर सके, इसी आधार पर उसे सर्वव्यापी, सर्वद्रष्टा बतलाया गया है। कण-कण में उसका निवास माना गया है । मनुष्य पर नियंत्रण रखने के लिए किसी न किसी शक्ति की आवश्यकता तो है ही । इसी आधार पर ईश्वर की संकल्पना की गई और इसी प्रकार असफलताओं को रोकने के लिए, अपने दोष पर परदा डालने के लिए 'भाग्य' की भी

कल्पना की गई। हम स्वयं अपने भाग्य विधाता है । जैसा कार्य करेंगे, वैसा फल पाएंगे। अतएव भाग्य को आप दोष न देंचींटी को देखें । वह कितनी बार चढ़ती-गिरती है । अगर वह भाग्यवादी होती तो फिर चढ़ ही न पाती । निरंतर प्रयास करके ही वह सफल होती है । वह भाग्य पर निर्भर नहीं, कर्म करके दिखलाती है। इस कारण बराबर कार्य में लगे रहें । सफलता हाथ आए या फिर असफलता ..., सफलता पर प्रसन्न होकर अपनी प्रगति धीमी न करें । असफलता पर घबराकर या निराश होकर मैदान छोड़कर न भागे । अपना कार्य बराबर आगे बढ़ाते रहें । जो उद्यम करते हैं, परिश्रमरत रहते हैं, निरंतर अपने कदम का प्यान रखते हैं, वे अवश्य ही जो भी इच्छा करते हैं, पा जाया करते हैं।

मनुष्य का भाग्य विधाता कौन है ?

A. उसके अपने कर्म

B. उसका अपना भाग्य

C. उसकी अपनी शिक्षा

D. उसका अपना ज्ञान

Answer:

Watch Video Solution

18. ईश्वर का नाम लेकर उस पर विश्वास कर हम मन में शक्ति का एकीकरण कर कार्यरत होते हैं । हमारा विश्वास मजबूत होता है कि हमारे साथ ईश्वर है । हम इस कार्य में सफल होंगे

। आत्मविश्वास को दृढ़ बनाने के लिए ईश्वर का अस्तित्व बनाया गया है । इसके साथ-साथ 'ईश्वर' की कल्पना मनुष्य को भयभीत भी करती है । एकांत में भी मनुष्य कोई पाप या गलत काम न कर सके, इसी आधार पर उसे सर्वव्यापी, सर्वद्रष्टा बतलाया गया है। कण-कण में उसका निवास माना गया है । मनुष्य पर नियंत्रण रखने के लिए किसी न किसी शक्ति की आवश्यकता तो है ही । इसी आधार पर ईश्वर की संकल्पना की गई और इसी प्रकार असफलताओं को रोकने के लिए, अपने दोष पर परदा डालने के लिए 'भाग्य' की भी कल्पना की गई। हम स्वयं अपने भाग्य विधाता है । जैसा कार्य करेंगे, वैसा फल पाएंगे। अतएव भाग्य को आप दोष न देंचींटी को देखें । वह कितनी बार चढ़ती-गिरती है । अगर वह भाग्यवादी होती तो फिर चढ़ ही न पाती । निरंतर प्रयास

करके ही वह सफल होती है । वह भाग्य पर निर्भर नहीं, कर्म करके दिखलाती है। इस कारण बराबर कार्य में लगे रहें । सफलता हाथ आए या फिर असफलता ..., सफलता पर प्रसन्न होकर अपनी प्रगति धीमी न करें । असफलता पर घबराकर या निराश होकर मैदान छोड़कर न भागे । अपना कार्य बराबर आगे बढ़ाते रहें । जो उद्यम करते हैं, परिश्रमरत रहते हैं, निरंतर अपने कदम का प्यान रखते हैं, वे अवश्य ही जो भी इच्छा करते हैं, पा जाया करते हैं।

ईश्वर की संकल्पना क्यों की गई है ?

A. हमें कुमार्ग पर जाने से रोकने के लिए।

B. हमें पुण्य करने का महत्त्व समझाने के लिए।

C. हमें भाग्य में विश्वास करना सिखाने के लिए।

D. जीवन में डर-डर कर आगे बढ़ने के लिए।

Answer:

Watch Video Solution

19. ईश्वर का नाम लेकर उस पर विश्वास कर हम मन में शक्ति का एकीकरण कर कार्यरत होते हैं । हमारा विश्वास मजबूत होता है कि हमारे साथ ईश्वर है । हम इस कार्य में सफल होंगे । आत्मविश्वास को दृढ़ बनाने के लिए ईश्वर का अस्तित्व बनाया गया है । इसके साथ-साथ 'ईश्वर' की कल्पना मनुष्य को भयभीत भी करती है । एकांत में भी मनुष्य कोई पाप या

गलत काम न कर सके, इसी आधार पर उसे सर्वव्यापी, सर्वद्रष्टा बतलाया गया है। कण-कण में उसका निवास माना गया है । मनुष्य पर नियंत्रण रखने के लिए किसी न किसी शक्ति की आवश्यकता तो है ही । इसी आधार पर ईश्वर की संकल्पना की गई और इसी प्रकार असफलताओं को रोकने के लिए, अपने दोष पर परदा डालने के लिए 'भाग्य' की भी कल्पना की गई। हम स्वयं अपने भाग्य विधाता है । जैसा कार्य करेंगे, वैसा फल पाएंगे। अतएव भाग्य को आप दोष न देंचींटी को देखें । वह कितनी बार चढ़ती-गिरती है । अगर वह भाग्यवादी होती तो फिर चढ़ ही न पाती । निरंतर प्रयास करके ही वह सफल होती है । वह भाग्य पर निर्भर नहीं, कर्म करके दिखलाती है। इस कारण बराबर कार्य में लगे रहें । सफलता हाथ आए या फिर असफलता ..., सफलता पर

प्रसन्न होकर अपनी प्रगति धीमी न करें । असफलता पर घबराकर या निराश होकर मैदान छोड़कर न भागे । अपना कार्य बराबर आगे बढ़ाते रहें । जो उद्यम करते हैं, परिश्रमरत रहते हैं, निरंतर अपने कदम का प्यान रखते हैं, वे अवश्य ही जो भी इच्छा करते हैं, पा जाया करते हैं।

चीटी हमें क्या संदेश देती है।

A. उठने के लिए गिरना आवश्यक है।

B. सफलता बार-बार गिरने से मिलती है।

C. सफलता हेतु सतत प्रयास आवश्यक है।

D. गिरने के लिए उठना आवश्यक है।

Answer:

Watch Video Solution

20. ईश्वर का नाम लेकर उस पर विश्वास कर हम मन में शक्ति का एकीकरण कर कार्यरत होते हैं । हमारा विश्वास मजबूत होता है कि हमारे साथ ईश्वर है । हम इस कार्य में सफल होंगे । आत्मविश्वास को दृढ़ बनाने के लिए ईश्वर का अस्तित्व बनाया गया है । इसके साथ-साथ 'ईश्वर' की कल्पना मनुष्य को भयभीत भी करती है । एकांत में भी मनुष्य कोई पाप या गलत काम न कर सके, इसी आधार पर उसे सर्वव्यापी, सर्वद्रष्टा बतलाया गया है। कण-कण में उसका निवास माना गया है । मनुष्य पर नियंत्रण रखने के लिए किसी न किसी शक्ति की आवश्यकता तो है ही । इसी आधार

पर ईश्वर की संकल्पना की गई और इसी प्रकार असफलताओं को रोकने के लिए, अपने दोष पर परदा डालने के लिए 'भाग्य' की भी कल्पना की गई। हम स्वयं अपने भाग्य विधाता है । जैसा कार्य करेंगे, वैसा फल पाएंगे। अतएव भाग्य को आप दोष न देंचींटी को देखें । वह कितनी बार चढ़ती-गिरती है । अगर वह भाग्यवादी होती तो फिर चढ़ ही न पाती । निरंतर प्रयास करके ही वह सफल होती है । वह भाग्य पर निर्भर नहीं, कर्म करके दिखलाती है। इस कारण बराबर कार्य में लगे रहें । सफलता हाथ आए या फिर असफलता ..., सफलता पर प्रसन्न होकर अपनी प्रगति धीमी न करें । असफलता पर घबराकर या निराश होकर मैदान छोड़कर न भागे । अपना कार्य बराबर आगे बढ़ाते रहें । जो उद्यम करते हैं, परिश्रमरत रहते हैं, निरंतर अपने कदम का

प्यान रखते हैं, वे अवश्य ही जो भी इच्छा करते हैं, पा जाया करते हैं।

गद्यांश में समर्थन किया गया है

A. धर्मवाद का

B. ईश्वरवाद का

C. भाग्यवाद का

D. कर्मवाद का

Answer:

Watch Video Solution

खंड ख व्यावहारिक व्याकरण

1. कमरे में आते ही भाई माहब का _____ देखकर प्राण सूख जाते | - रेखांकित पदबंध है -

A. सर्वनाम पदबंध

B. विशेषण पदबंध

C. संज्ञा पदबंध

D. क्रियाविशेषण पदबंध

Answer:

Watch Video Solution

2. 'सुलेमान उनकी बातें सुनकर थोड़ी दूर पर रुक गए।' - इस वाक्य में क्रिया पदवप है -

A. उनकी बातें सुनकर

B. थोड़ी दूर पर

C. रुक गए

D. बातें सुनकर थोड़ी दूर

Answer:

Watch Video Solution

3. 'उसने तताँरा को तरह-तरह से अपमानित किया। - इस वाक्य में रेखांकित पदबंध का प्रकार है

A. विशेषण पदबंध

B. क्रियाविशेषण पदबंध

C. सर्वनाम पदबंध

D. क्रिया पदबंध

Answer:

Watch Video Solution

4. फैलते हुए प्रदूषण ने पंछियों को बस्तियों से भगाना शुरू कर दिया ।' - रेखांकित पदबंध का भेद है

A. संज्ञा पदबंध

B. सर्वनाम पदबंध

C. क्रिया पदबंध

D. विशेषण पदबंध

Answer:

Watch Video Solution

5. वह तलवार को अपनी तरफ खींचते-खींचते दूर तक पहुँच गया।' -रेखांकित पदबंध का भेद छांटिए।

A. क्रिया पदबंध

B. विशेषण पदबंध

C. क्रियाविशेषण पदबंध

D. सर्वनाम पदबंध

Answer:

Watch Video Solution

6. निम्नलिखित में से उपयुक्त सरल वाक्य छाँटिए -

A. जो कुछ पढ़ो, उसका अभिप्राय समझो।

B. भाई साहब उपदेश देने की कला में निपुण थे।

C. में उनकी लताड़ सुनता और आँसू बहाने लगता।

D. वे तो वही देखते हैं जो पुस्तक में लिखा है।

Answer:

Watch Video Solution

7. खिड़की के बाहर अब दोनों कबूतर रात-भर खामोश और उदास बैठे रहते है। रचना की दृष्टि से वाक्य है

A. सरल वाक्य

B. संयुक्त वाक्य

C. मिश्र वाक्य

D. संकेतवाचक वाक्य

Answer:

Watch Video Solution

8. बात सुनी और दुःखी ही मुर्दैत तक रोते रहे।

- इस वाक्य का सरल वाक्य क रूप में रूपातरित वाक्य है

A. जब नूह ने उसकी बात सुनी तब वे दुःखी हो गए और मुद्दत तक रोते रहे।

B. नूह उसकी बात सुनकर दुःखी हो मुद्दत तक रोते रहे।

C. नूह ने दुःखी होकर उसकी बात सुनी और मुद्दत तक रोते रहे।

D. चूंकि नूह ने उसकी बात सुनी इसलिए वे दुःखी हो मुदत तक रोते रहे।

Answer:

Watch Video Solution

9. निम्नलिखित वाक्यों में संयुक्त वाक्य है

A. संसार की रचना कैसे भी हुई हो लेकिन धरती किसी एक की नहीं है।

B. सहसा नारियल के झुरमुटों में उसे एक आकृति कुछ साफ हुई।

C. बार-बार ततारा का याचना भरा चेहरा उसकी आँखों में तैर जाता था।

D. मेरे जीवन में यह पहली बार है कि मैं इस तरह से विचलित हुआ हूँ।

Answer:

Watch Video Solution

10. सालाना इम्तिहान में मैं पास हो गया और दरजे में प्रथम आया।'

रूपांतरित करने पर इस वाक्य का मिश्र वाक्य होगा -

A. सालाना इम्तिहान मे में पास होकर दरजे में प्रथम आया।

B. सालाना इम्तिहान हुआ, में पास हो गया और दरजे में प्रथम आया ।

C. में पास हो गया और दरजे में प्रथम आया क्योंकि सालाना इम्तिहान हुआ।

D. जब सालाना इम्तिहान हुआ तो मैं उसमें पास हो गया और दरजे में प्रथम आया ।

Answer:

Watch Video Solution

11. 'नरहरि' शब्द किस समास का उदाहरण है ?

A. अव्ययीभाव समास

B. द्विगु समास

C. तत्पुरुष समास

D. कर्मधारय समास

Answer:

Watch Video Solution

12. तत्पुरुष समास का उदाहरण है

A. थोड़ा-बहुत

B. आगे-पीछे

C. परिंदे-चरिंदे

D. शब्द-रचना

Answer:

Watch Video Solution

13. अव्ययीभाव समास का उदाहरण नहीं है-

A. बेवक्त

B. बेहतर

C. बेकार

D. बेराह

Answer:

Watch Video Solution

14. आँचरहित' शब्द के लिए सही समास विग्रह है-

A. आँच से रहित

B. आंच और रहित

C. आंच में रहित

D. रहित आँच के

Answer:

Watch Video Solution

15. उत्तर पद प्रधान होता है

A. बहुव्रीहि समास का

B. अव्ययीभाव समास का

C. दुवंद्व समास का

D. तत्पुरुष समास का

Answer:

Watch Video Solution

16. शब्दहीन' शब्द के लिए सही समास विग्रह और भेद का चयन कीजिए-

A. शब्द है जो हीन - कर्मधारय

B. हीन हे जी शब्द - तत्पुरुष

C. शब्द से हीन - कर्मधारय

D. शब्द से हीन - तत्पुरुष

Answer:

Watch Video Solution

17. 'निराशा के बादल छटना - मुहावरे का सही अर्थ है -

A. कुछ अच्छा होना

B. परेशान होना

C. उदासी दूर होना

D. दुःखी हो जाना

Answer:

Watch Video Solution

18. व्यम्य करना' वाक्यांश के लिए उपयुक्त मुहावरा है-

A. सूक्ति बाण चलाना

B. आड़े हाथों लेना

C. दाँतों पसीना आना

D. बहुत फजीहत करना

Answer:

Watch Video Solution

19. ईश्वर को पाने के लिए _____ ही पड़ता है। - रिक्त स्थान की पूर्ति के लिए उपयुक्त मुहावरे का चयन कीजिए।

A. बेराह चलना

B. आपा खोना

C. मुंह की खाना

D. लोहा मानना

Answer:

Watch Video Solution

20. मुहावरे और अर्थ के उचित मेल वाले विकल्प का चयन कीजिए।

A. घुड़कियाँ खाना - साहस प्राप्त होना

B. तलवार खींचना - सब कुछ नष्ट करना

C. पन्ने रँगना - व्यर्थ में लिखना

D. आग-बबूला होना - अपने वश में रहना

Answer:

Watch Video Solution

21. 'आटे-दाल का भाव मालूम होना' मुहावरे का अर्थ है -

A. किसी को सबक सिखाना

B. कठिनाइयों का ज्ञान होना

C. चीजों के भाव पता चलना

D. खरीदारी के गुरों का ज्ञान होना

Answer:

Watch Video Solution

खंड ग पाठ्यपुस्तक

1. जब में था तब हरि नहीं, अब हरि है में नॉहि।

सब अंधियारा मिटि गया, जब दीपक देख्या माहि ॥

पोथी पढ़ि-पढ़ि जग मुबा, पंडित भया न कोई।

ऐकै अषिर पीव का, पढे सु पंडित होइ ।।

'जब मैं था' में 'मैं' किसका प्रतीक है ?

A. कवि

B. ईश्वर

C. जगत

D. अहंकार

Answer:

Watch Video Solution

2. जब में था तब हरि नहीं, अब हरि है में नॉहि।

सब अंधियारा मिटि गया, जब दीपक देख्या माहि ॥

पोथी पढ़ि-पढ़ि जग मुबा, पंडित भया न कोई।

ऐकै अषिर पीव का, पढे सु पंडित होइ ।।

कवि ने सच्चा ज्ञानी किसे माना है ?

A. जो बहुत अधिक शिक्षित हो

B. जो बिलकुल ही अशिक्षित हो

C. जो धार्मिक नियमों को माने

D. जो सबके प्रति प्रेम-भाव रखे

Answer:

Watch Video Solution

3. जब में था तब हरि नहीं, अब हरि है में नॉहि।

सब अंधियारा मिटि गया, जब दीपक देख्या माहि ॥

पोथी पढ़ि-पढ़ि जग मुबा, पंडित भया न कोई।

ऐकै अषिर पीव का, पढे सु पंडित होइ ।।

ईश्वर-ज्ञान कैसे संभव है ?

A. भक्ति-भाव पूर्ण भजन से

B. तीर्थ यात्रा पर जाने से

C. पर्याप्त दान-पुण्य करने से

D. अहंकार के नष्ट होने से

Answer:

Watch Video Solution

4. निम्नलिखित कथनों में से सत्य कथन छाँटिए

A. ईश्वर और अज्ञान का निवास साधे-साथ ही होता है।

B. ईश्वर और मैं-भाव साथ-साथ निवास नहीं कर सकते।

C. ईश्वर और अहंकार में परस्पर विरोध भाव नहीं है।

D. ईश्वर और अहंकार में परस्पर सहयोग का भाव होता है।

Answer:

Watch Video Solution

5. बीमारों घर पहुंचकर भीतर ही भीतर कुछ बेचैनी महसूस करने लगी। उसके भीतर तताँरा से मुक्त होने की एक झूठी छटपटाहट थी । एक झल्लाहट में उसने दरवाज़ा बंद किया और मन को किसी और दिशा में ले जाने का प्रयास किया । बार-बार तताँरा का याचना भरा चेहरा उसकी आँखों में तैर जाता । उसने तताँरा के बारे में कई कहानियाँ सुन रखी थीं । उसकी कल्पना में वह एक अद्भुत साहसी युवक था । किंतु वही तताँरा उसके सम्मुख एक अलग रूप में आया। सुंदर, सभ्य, बलिष्ठ किंतु बेहद शांत और भोला । उसका ब्यक्तित्व कदाचित वैसा ही था जैसा वह अपने जीवन साथी के बारे में सोचती रही थी। किंतु एक दूसरे गाँव के युवक के साथ संबंध परंपरा के विरुद्ध था । अतएव उसने उसे भूल जाना ही

श्रेयस्कर समझा।

वामीरो के लिए तृतौरा को भूलना क्यों आवश्यक था ?

A. तितारा से मिलकर उसका मन बेचैन हो गया था।

B. ततारा ने उसे गीत गाने को विवश किया था।

C. बह उसके जीवन-साथी की कल्पना पर खरा नहीं था।

D. दूसरे गाँव के युवक से संबंध रखना परंपरा के विरुद्ध था।

Answer:

Watch Video Solution

6. बीमारों घर पहुंचकर भीतर ही भीतर कुछ बेचैनी महसूस करने लगी। उसके भीतर तताँरा से मुक्त होने की एक झूठी छटपटाहट थी । एक झल्लाहट में उसने दरवाज़ा बंद किया और मन को किसी और दिशा में ले जाने का प्रयास किया । बार-बार तताँरा का याचना भरा चेहरा उसकी आँखों में तैर जाता । उसने तताँरा के बारे में कई कहानियाँ सुन रखी थीं । उसकी कल्पना में वह एक अद्भुत साहसी युवक था । किंतु वही तताँरा उसके सम्मुख एक अलग रूप में आया। सुंदर, सभ्य, बलिष्ठ किंतु बेहद शांत और भोला । उसका ब्यक्तित्व कदाचित वैसा ही था जैसा वह अपने जीवन साथी के बारे में सोचती रही थी। किंतु एक दूसरे गाँव के युवक के साथ संबंध परंपरा के विरुद्ध था । अतएव उसने उसे भूल जाना ही

श्रेयस्कर समझा।

वामीरो घर पहुंचकर कैसा महसूस कर रही थी ?

A. आहलादित

B. सयंत

C. संकुचित

D. असहज

Answer:

Watch Video Solution

7. ततांरा से मुक्त होने की झूठी छटपटाहट का आशय है

A. सहानुभूति ओर दिखावे के लिए मुक्त होने का दिखावा करना।

B. वह सचमुच ही ततांरा की यादों से मुक्त चाहती थी।

C. उसे ततांरा के तरीके ओर बातों पर गुस्सा आ रहा था।

D. वह ततांरा के तीर तरीके से बहुत अधिक प्रभावित थी।

Answer:

Watch Video Solution

8. बीमारों की कल्पना वाला ततांरा कैसा था?

A. अद्भुत -साहसी

B. सभ्य-भोला

C. भोला-शांत

D. सुंदर-सभ्य

Answer:

Watch Video Solution

9. गांव की क्या परंपरा थी?

A. अपने गांव के युवक के संबंध निषेध की

B. दूसरे गांव के युवक से संबंध निषेध की।

C. ततांरा जैसे युवक के साथ साथ निषेध की।

D. याचक जैसे युवक के साथ संबंध-निषेध की।

Answer:

Watch Video Solution

10. निम्नलिखित पठित पद्यांश पर आधारित प्रश्नों के सही उत्तर वाले विकल्प चुनिएः

बाइबिल और दूसरे पाचन ग्रंथों में नूह नाम के एक पैगंबर का जिक्र मिलता है। उनका असली नाम लशकर था। लेकिन अरब में उन्हें नूह के लकब से याद किया जाता है। वह इसलिए कि वह सारी उम्र सोते रहे। इसका कारण एक जखमी कुत्ता था। नूह के सामने से एक बार एक घायल कुत्ता गुजरा। नूह ने उसे दुत्कारते हुए कहा, दूर हो जा गंदे कुत्ते! इस्लाम में कुत्तों को गंदा समझा जाता है। कुत्ते ने उनकी दुत्कार सुनकर जवाब दिया, न मैं अपनी मर्जी से कुत्ता हूं, न तुम अपनी पसंद से इनसान हो। बनाने वाला सबका तो वही एक है।

मट्टी से मट्टी मिले, खो के सभी निशान।

किसें कितना कौन है, कैसे हो पहचान॥

नूह ने जब उसकी बात सुनी तब दु:खी हो मुद्दत तक रोते रहे।

महाभारत में युधिष्ठिर को अंत तक साथ निभाता नजर आता

है वह भी प्रतीकात्मक रूप में एक कुत्ता ही था।

सभी जीवों का जन्म किसी मर्जी से होता है?

A. स्वयं की

B. धर्म की

C. कर्म की

D. ईश्वर की

Answer:

Watch Video Solution

11. निम्नलिखित पठित पद्यांश पर आधारित प्रश्नों के सही उत्तर वाले विकल्प चुनिएः

बाइबिल और दूसरे पाचन ग्रंथों में नूह नाम के एक पैगंबर का जिक्र मिलता है। उनका असली नाम लशकर था। लेकिन अरब में उन्हें नूह के लकब से याद किया जाता है। वह इसलिए कि वह सारी उम्र सोते रहे। इसका कारण एक जखमी कुत्ता था। नूह के सामने से एक बार एक घायल कुत्ता गुजरा। नूह ने उसे दुत्कारते हुए कहा, दूर हो जा गंदे कुत्ते! इस्लाम में कुत्तों को गंदा समझा जाता है। कुत्ते ने उनकी दुत्कार सुनकर जवाब दिया, न मैं अपनी मर्जी से कुत्ता हूं, न

तुम अपनी पसंद से इनसान हो। बनाने वाला सबका तो वही एक है।

मट्टी से मट्टी मिले, खो के सभी निशान।

किसें कितना कौन है, कैसे हो पहचान॥

नूह ने जब उसकी बात सुनी तब दु:खी हो मुद्दत तक रोते रहे।

महाभारत में युधिष्ठिर को अंत तक साथ निभाता नजर आता है वह भी प्रतीकात्मक रूप में एक कुत्ता ही था।

नूह सारी उम्र क्यों रोते रहे?

A. लशकर होने के कारण

B. पैगंबर होने के कारण

C. प्रायश्चित भाव के कारण

D. अस्वस्थ होने के कारण

Answer:

Watch Video Solution

12. निम्नलिखित पठित पद्यांश पर आधारित प्रश्नों के सही उत्तर वाले विकल्प चुनिएः

बाइबिल और दूसरे पाचन ग्रंथों में नूह नाम के एक पैगंबर का जिक्र मिलता है। उनका असली नाम लशकर था। लेकिन अरब में उन्हें नूह के लकब से याद किया जाता है। वह इसलिए कि वह सारी उम्र सोते रहे। इसका कारण एक

जखमी कुत्ता था। नूह के सामने से एक बार एक घायल कुत्ता गुजरा। नूह ने उसे दुत्कारते हुए कहा, दूर हो जा गंदे कुत्ते! इस्लाम में कुत्तों को गंदा समझा जाता है। कुत्ते ने उनकी दुत्कार सुनकर जवाब दिया, न मैं अपनी मर्जी से कुत्ता हूं, न तुम अपनी पसंद से इनसान हो। बनाने वाला सबका तो वही एक है।

मट्टी से मट्टी मिले, खो के सभी निशान।

किसें कितना कौन है, कैसे हो पहचान॥

नूह ने जब उसकी बात सुनी तब दुःखी हो मुद्दत तक रोते रहे। महाभारत में युधिष्ठिर को अंत तक साथ निभाता नजर आता है वह भी प्रतीकात्मक रूप में एक कुत्ता ही था।

गद्यांश का संदेश है:

A. हमें सबसे प्रति असंवेदनशील होना चाहिए।

B. हमें सबसे प्रति संवेदनशील होना चाहिए।

C. हमें किसी गलती के लिए ताउम्र रोना चाहिए।

D. ताउम्र रोना ही सही मायने में प्रायश्चित है।

Answer:

Watch Video Solution

13. निम्नलिखित पठित पद्यांश पर आधारित प्रश्नों के सही उत्तर वाले विकल्प चुनिएः

बाइबिल और दूसरे पाचन ग्रंथों में नूह नाम के एक पैगंबर का

जिक्र मिलता है। उनका असली नाम लशकर था। लेकिन अरब में उन्हें नूह के लकब से याद किया जाता है। वह इसलिए कि वह सारी उम्र सोते रहे। इसका कारण एक जखमी कुत्ता था। नूह के सामने से एक बार एक घायल कुत्ता गुजरा। नूह ने उसे दुत्कारते हुए कहा, दूर हो जा गंदे कुत्ते! इस्लाम में कुत्तों को गंदा समझा जाता है। कुत्ते ने उनकी दुत्कार सुनकर जवाब दिया, न मैं अपनी मर्जी से कुत्ता हूं, न तुम अपनी पसंद से इनसान हो। बनाने वाला सबका तो वही एक है।

मट्टी से मट्टी मिले, खो के सभी निशान।

किसें कितना कौन है, कैसे हो पहचान॥

नूह ने जब उसकी बात सुनी तब दुःखी हो मुद्दत तक रोते रहे। महाभारत में युधिष्ठिर को अंत तक साथ निभाता नजर आता

है वह भी प्रतीकात्मक रूप में एक कुत्ता ही था।

मट्टी से मट्टी मिले, खोकर सभी निशान का आशय है:

A. मृत्यूपरांत सभी जीवों का निजी अस्तित्व समाप्त हो जाता है।

B. मिट्टी, मिट्टी में सी मिलाई जा सकती है।

C. सभी जीवों का निर्माण मिट्टी से नहीं हुआ है।

D. सभी जीवों का अस्तित्व स्वयं उसके वश में हैं।

Answer:

Watch Video Solution

14. निम्नलिखित पठित पद्यांश पर आधारित प्रश्नों के सही उत्तर वाले विकल्प चुनिएः

बाइबिल और दूसरे पाचन ग्रंथों में नूह नाम के एक पैगंबर का जिक्र मिलता है। उनका असली नाम लशकर था। लेकिन अरब में उन्हें नूह के लकब से याद किया जाता है। वह इसलिए कि वह सारी उम्र सोते रहे। इसका कारण एक जखमी कुत्ता था। नूह के सामने से एक बार एक घायल कुत्ता गुजरा। नूह ने उसे दुत्कारते हुए कहा, दूर हो जा गंदे कुत्ते! इस्लाम में कुत्तों को गंदा समझा जाता है। कुत्ते ने उनकी दुत्कार सुनकर जवाब दिया, न मैं अपनी मर्जी से कुत्ता हूं, न तुम अपनी पसंद से इनसान हो। बनाने वाला सबका तो वही एक है।

मट्टी से मट्टी मिले, खो के सभी निशान।

किसें कितना कौन है, कैसे हो पहचान॥

नूह ने जब उसकी बात सुनी तब दु:खी हो मुद्दत तक रोते रहे।

महाभारत में युधिष्ठिर को अंत तक साथ निभाता नजर आता

है वह भी प्रतीकात्मक रूप में एक कुत्ता ही था।

नूह ने कुत्ते को क्यों दुत्कारा?

A. वह उनसे अधिक ज्ञानी था।

B. वह उन्हें काफी खतरनाक लगा।

C. उन्हें कुत्ते पसंद नहीं थे

D. वे कुत्ते को गंदा मानते थे।

Answer:

Watch Video Solution